'समानो मन्त्रः समितिः समानी'

UNIVERSITY OF NORTH BENGAL

B.A. Programme 5th Semester Examination, 2022

DSE1/2-P1-HINDI (5)

Time Allotted: 2 Hours | Full Marks: 60

The figures in the margin indicate full marks.

'प्रयोजनपरक हिंदी' और 'कबीरदास' में से किसी एक पत्र का उत्तर लिखिए।
उत्तर-पुस्तिका में पत्र उल्लेख कीजिए।

प्रयोजनपरक हिंदी

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए – 3×4 = 12

(क) समाचार पत्र का महत्व बताइए।

(ख) आज के समय में विज्ञापन की उपयोगिता लिखिए।

(ग) हिन्दी की तीन वर्तमान साहित्यिक पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

(घ) अनुवाद का स्वरूप बताइए।

(ङ) प्रयोजनमूलक हिंदी के दो क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए।

(च) इंटरनेट का महत्व बताइए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं चार विषयों पर टिप्पणी लिखिए – 6×4 = 24

(क) प्रयोजनपरक हिंदी

(ख) श्रव्य माध्यम एवं दृश्य-श्रव्य माध्यम में अंतर

(ग) रेडियो

(घ) इंटरनेट

(ङ) भावानुवाद

(च) संचार माध्यमों की प्रकृति

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए – 12×2 = 24

(क) प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका बताइए।

(ख) अनुवाद की परिभाषा बताते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'दृश्य-श्रव्य' माध्यम के रूप में टेलीविजन के महत्त्व को उद्‌घाटित कीजिए।

(घ) विविध संचार माध्यमों का उल्लेख कीजिए।

कबीरदास

1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए – 3×4 = 12

(क) कबीर के दोहों को किस नाम से जाना जाता है और क्यों ?

(ख) कबीर की भाषा को 'खिचड़ी' या 'पंचमेल' किसने कहा और क्यों ?

(ग) कबीरदास जी की मृत्यु कब और कहाँ हुई थी ?

(घ) 'कबीर' पुस्तक के लेखक कौन हैं ? इस पुस्तक में कबीर को सिर से पाँव तक मस्तमौला क्यों कहा गया है ?

(ङ) कबीर ने माया से दूर रहने के लिए क्यों कहा है ? उनके अनुसार माया से बचने के क्या उपाय हैं ?

(च) कबीर के बारे में कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर की क्या राय थी ?

2. निम्नलिखित पद्यांश में से किन्हीं चार की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – 6×4 = 24

(क) सतगुर सवाँन को सगा, सोकी सई न दाति।
हरिजी सवाँन को हितू, हरिजन सईं न जाति।।

(ख) कबीर जिभ्या स्वाद ते, क्यूँ पल में ले काम।
अंगि अविदया ऊपजै, जाइ हिरदा मैं राम।।

(ग) दुलहनी गावहु मंगलचार,
हम घरि आए हो राजा राम भरतार।।
तन रत करि मैं मन रत करि हूँ, पंचतत्त बराती।
राम देव मोरैं पाँहुनैं आये मैं जोवन मैं माती।।

(घ) मन कै मते न चालिये, छाड़ि जीव की बाँणि।
ताकू केरे सूत ज्यूँ, उलटि अपूठा आँणि।।

(ङ) कबीर तेज अनंत का, मानी ऊगी सूरज सेणि।
पति संगि जागी सूंदरी, कौतिग दीठा तेणि।।

(च) राम नाम के पटतरे, देबे कौ कुछ नाहिं।
क्या ले गुर सन्तोषिए, हौंस रही मन माहिं।।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के आलोचनात्मक उत्तर दीजिए – 12×2 = 24

(क) 'कबीर ग्रंथावली' में 'गुरुदेव को अंग' में कबीर द्वारा गुरु की महत्ता अन्तः व्यंजित है'– इस कथन पर विस्तार से विचार कीजिए।

(ख) कबीर की विद्रोही चेतना पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'कबीर की साखियाँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।'– कथन की पुष्टि आलोचनात्मक उत्तर के तौर पर कीजिए।

(घ) 'कबीर भक्त थे या समाज-सुधारक ?'– युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।

——×——